॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! हमें उस विज्ञान के मार्ग पर ले चल जिस विज्ञान में हमें वास्तव में बुद्धि प्राप्त होती है, जिस विज्ञान में जाकर हम इस प्रकृति को अपने आधीन बना करके इस पर शासन करें, हे प्रभु! हमें उस ऊँचे विज्ञान पर ले चल जहाँ प्रभु हम तेरा गान गाते रहें। हे प्रभु! हमें उस सृष्टि में ले चल जहाँ प्रभु आपका सूर्य अस्त नहीं होता, हे प्रभु! हमें इस सँसार की इतनी ऊँची की आवश्यकता नहीं है जहाँ प्रातः सूर्य उदय होता है और सायंकाल को अस्त हो जाता है। प्रभु इस सूर्य की आवश्यकता नहीं, प्रभु! उस सृष्टि की आवश्यकता है जिस सृष्टि में आपका ज्ञान रूपी सूर्य किसी प्रकार शान्त न हो सके।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(चतुर्थ पुष्प–प्रवचन-दिनाँक 19 अप्रैल 1964)

अँक : 479 समग्र अँक : 554
वर्ष : 40 समग्र वर्ष : 47

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	गृह-निर्माण	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-14
3.	शिव	पूज्यपाद-गुरुदेव	15-18
4.	मानव को याग की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-25
5.	दान, सूचना, पुस्तकों की सूची इत्यादि		26-32

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय शिष्य का 70 वाँ जन्मोत्सव दिनाँक 1 अक्टूबर से 3 अक्टूबर, 2012 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह बरनावा में सामवेद ब्रह्म पारायण महायाग के आयोजन द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ श्री गाँधी धाम समिति (पँजी) द्वारा मनाया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धी एवम् मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

–श्री गाँधी धाम समिति (पंजी.)

शृङ्गीऋषि बेवसाईट
www.shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

गृह–निर्माण

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान-गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा गृह-स्वामी है और यह जो ब्रह्माण्ड है यह मानो देखो उसका अवृत्त्व है और वह उसी में मानो वास करता रहता है। इसलिए हम परमपिता-परमात्मा को गृह-स्वामी कहते है। हमारे यहां प्रायः जब इन लोक-लोकान्तरों का वर्णन किया जाता है और नाना प्रभु की प्रतिभा का वर्णन आता है तो प्रायः ऐसा वेद-मन्त्र हमें प्रेरणा देता रहता है कि जितने भी ब्रह्माण्ड में ग्रह है, परमात्मा के जगत् में जितने भी यह पिण्डाकार ग्रहों का निर्माण किया है, उन सर्वत्र प्राणियों में सर्वत्र-ग्रहों में कोई-न-कोई मानो गृह-स्वामी वास करता है। **परमपिता-परमात्मा ने दो प्रकार के ग्रहों का निर्माण किया**–एक तो यह जो ब्रह्माण्ड है यह ग्रहों का समूह कहलाया गया है। मानो निर्माणवेत्ता प्रभु के होने से परमात्मा को गृह-स्वामी कहा है, गृहपति कहा है और इस मानव-शरीर रूपी जब गृह का निर्माण किया तो इसमें जो आत्मा है, वह गृह-स्वामी है परन्तु मानव-शरीर में आ करके उसमें पंच-महाभूतों के इन शरीर को धारण किया और धारण करने के पश्चात् उसमें भी एक पंच-महाभूतों के गृह का निर्माण किया।

गृह की व्याख्या

मुझे आज यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है क्या इन गृहों के सम्बन्ध में कुछ विचार-विनिमय दिया जाएं क्योंकि गृह और गृह-स्वामी और गृह-स्वामिनी, सर्वत्र मानो इस गृह में वास करते हैं। क्योंकि आत्मा का तो गृह केवल पंच-महाभूतों का निर्मित है, परन्तु जब वह इस सँसार में भौतिक-जगत में आ करके भौतिकता के गृहों का निर्माण करते हैं, तो उस समय उनका गृह-स्वामी और गृह-स्वामिनी के नामों से मानों उसका वर्णन किया जाता है। प्रायः वास्तव में तो यह जो मानव का पंच-महाभौतिक जो पिण्ड है इसमें जो आत्मा वास करता है, वह भिन्न है और वह इससे भिन्न कहलाता है। वह एक रस रहने वाला आत्मा है, चेतना है और वह पंच-महाभूतों को धारण किए हुए मानो देखो पिण्डाकार में निहित रहता है, जैसे परमपिता-परमात्मा इस पंच-महाभूतों के प्रायः ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है और यह नाना प्रकार के जो लोक-लोकान्तर है किसी लोक में अग्नि प्रधान है तो किसी ग्रह में आपो जल प्रधान है और किसी मण्डल में वायु प्रधान मानो पृथ्वी प्रधान माना गया है। तो तीन प्रकार के परमाणुओं से, तीन प्रकार की आभाओं से मानो देखो ग्रहों का निर्माण होता है हमारे यहां परमाणु तो तीन ही माने गये हैं–गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी मानो देखो वायु इनको परमाणुओं को गमन कराती है और **अमृतम ब्रह्मा** अन्तरिक्ष में ये भ्रमण करते हैं। तो विचार-विनिमय क्या देखो मुनिवरों! जितने भी यह लोक-लोकान्तर है मानो जैसे चन्द्रमण्डल है अथवा मंगल है और भी नाना मण्डल जैसे बृहस्पति और अरून्धति और देखो वशिष्ठ का वर्णन आता रहा है परन्तु ध्रुव-मण्डल है और ध्रुव-मण्डल से ऊर्ध्ववृत्ति भागों में आरुणी और अरून्धति-आरुणी और मूल-नक्षत्रों का वास रहता है और मूल नक्षत्रों के निचले भाग में पुष्प-नक्षत्र और स्वाति-ग्रह का भी वास रहता है। मानो इसी प्रकार यह मण्डलों का एक-दूसरे का तारतम्य बना हुआ है। जैसे माला में एक सूत्र में मनके पिरोने से माला बन जाती

है इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों की एक माला बन गई है और वह माला मानो देखो एक-दूसरे में पिरोई हुई है तो इसलिए वह अवन्तिका के रूप में गमन करती रही है।

तो आज मैं बेटा! देखो इस सम्बन्ध में लोक-लोकान्तरों में न जाता हुआ केवल यह कि यह ग्रह कहलाते हैं। जैसे हमारे यहां देखो मंगल ग्रह है इसी प्रकार बुध भी ग्रह माना गया है। शनि भी ग्रह माना गया है और मुनिवरों! देखो और भी नाना जैसे शुक्र ग्रह का वर्णन आता है। तो हमारे यहाँ देखो इन लोक-लोकान्तरों का जो एक समूह बन गया है इसमें सब प्राणी वास करते रहते हैं। जब मैं बेटा! इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करता हूं तो विचार आता है जब मुनिवरों! देखो **सूक्ष्म-शरीर वाला आत्मा जब यह स्थूल-शरीर को त्यागता रहता है तो यह कुछ ग्रहों में भ्रमण करने चला जाता है,** मानो देखो यह **कुछ वायु मण्डल इस प्रकार के है, जिन वायुमण्डलों में यह आत्मा अपने सूक्ष्म-शरीर द्वारा वास करता रहता है अथवा भ्रमण भी करता है।** तो आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में चर्चाएं नहीं, केवल यह क्या यह ग्रह हैं, ग्रहों में प्राणी वास करते हैं। जैसे मंगल मँडल है यह जो मंगल गृह है, इसमें जैसा यह पृथ्वी मण्डल का जीवन है या पृथ्वी मण्डल पर जैसे प्राणी वास करता है, इसी प्रकार **मंगल और बुध दोनों में वशिष्ठ और अरून्धति इन मण्डलों में इसी प्रकार पार्थिव तत्त्व वाले प्राणी वास करते हैं,** तो मानो देखो वह गृह कहा जाता है। ग्रह का अभिप्राय यह है जहां मानव, जहाँ प्राणी गृह बना करके अपना वास करता है। तो मेरे प्यारे! देखो मैं आज गृहों के सम्बन्ध में वेद-मन्त्र के जो जिस प्रकार के संकेत अथवा प्रेरणा मुझे प्राप्त हो रही थी, जहां प्रायः ग्रहों का वर्णन आता रहा है। मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहा है ऋषि-मुनियों का प्रायः यातायात भी बना रहा है और वह पृथ्वी-मँडल और मंगल-मँडल के दोनों का यातायात और देखो वह अरून्धति और वशिष्ठ मण्डल का, इनका, सबका यातायात एक क्रतियों में

विद्यमान रहा है।

महाराजा-अर्जुन का मंगल ग्रह में भ्रमण

तो मुनिवरों! देखो जहां पार्थिव-तत्त्व वाले प्राणी रहते हैं वहां विज्ञान भी है, वहां अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या भी मानो निर्माणीत की जाती है। मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब महाराजा-अर्जुन इन्द्र के द्वार पर पहुंचे तो इन्द्र के द्वारा इन्द्र की संरक्षणता में तपस्या की और तपस्या करने के पश्चात् अस्त्र-शस्त्रों की विद्या का उन्होंने मानो शिक्षण किया और वह शिक्षा को प्राप्त करते रहे। उसके पश्चात् वह अपने यन्त्रों को निर्माण करके मंगल-मँडल में भी प्रायः देखो वह भ्रमण करने के लिए और अपने अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या पान करने के लिए भी मानो देखो मंगल में वह पहुंचे। तो आज मैं बेटा! देखो इस सम्बन्ध में चर्चा नहीं केवल क्योंकि कई माह तक मुनिवरों! देखो मंगल मँडल में उनका वास रहा, क्योंकि **मंगल मँडल का जो प्राणी है अथवा वहां का जो वायु मण्डल है, वह पार्थिव-तत्त्वों से मानो देखो, इसके कुछ समकालीन माना गया है। तो इसी प्रकार जैसे बुध- ल का भी और अरून्धति और देखो वशिष्ठ-मण्डल का भी इसी प्रकार वायुमण्डल हमारे यहां स्वीकार किया गया है।** मेरे प्यारे! देखो महाराजा-शिव और मुनिवरों! देखो उसके पूर्व काल में गणेश-जी और हनुमान-जी दोनों की बड़ी मित्रता मानो देखो, विज्ञान की मित्रता इन दोनों की थी, वह समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके अन्वेषण करते रहे।

आत्मा का गृह

तो आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान के युग में नहीं ले जा रहा हूं। केवल यह कि मुनिवरों! देखो आज मैं और ऊर्ध्वा में तुम्हें गमन कराना केवल यह कि हमारा **गृह प्रविशाम ब्रह्मा क्रति** मैं वेद-का मन्त्र आता है। हे मानव! तू गृह में प्रवेश हो जा और कौन से गृह में प्रवेश हो मानो **सबसे**

प्रथम तू जो परमात्मा ने तेरे शरीर रूपी गृह का निर्माण किया है, इस गृह में आत्मा वास करता है। तू इसमें मानो प्रवेश कर जब आत्मा इसमें प्रवेशिका को प्राप्त करता है, तो मेरे प्यारे! देखो यह ये चेतनित बना रहता है और गृह है इसमें पंच-महा मानो देखो भूत जो परमाणुओं का एक-दूसरे का समूह बना रहता है जैसे मुनिवरों! देखो हमारे यहां पार्थिव जब इसमें तरलत्व और तेजोमयी परमाणुओं का मिलान होता है तो उसके पश्चात् गुरुत्व परमाणु आता है तो यह शरीर का, पिण्ड का निर्माण हो जाता है और पिण्ड का निर्माण हो करके मानो देखो इसमें पिण्ड को गति देने के लिए मुनिवरों! देखो वायु का व्यवधान होता है और वायु अपने पांच प्रकार के रूप को धारण करता है और पांच प्रकार का रूप उसका प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान मानो **यह पंच-महा एक ही वायु के पांच प्रकार के स्वरूप माने गए है** तो हम प्राणशक्ति कहते हें और वह प्राण मानो देखो इन पंच-महाभूतों में प्रवेश हो करके मुनिवरों! देखो वायु इसमें मिश्रित होती है और जब यह गमन करता है तो मानो देखो इसको अन्तरिक्ष कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! इसी प्रकार जब इसमें देखो यह गतिवान बन गया और गति आ गई तो मानो देखो **ब्रह्मणे जानाम भूतम ब्रह्मा** इसे ज्ञान भी होना चाहिए। तो ज्ञान के लिए बेटा! देखो आत्मा सूत्र बन करके इन सबको अपने में पिरोने का उन्होंने मानो देखो सूत्र का क्रियाकलाप किया और सूत्र बन करके मुनिवरों! इन पंच-महाभूतों में प्राण में भी और गुरुत्व परमाणु में भी तेजोमयी और देखो तरलत्व में भी इन सबमें मिश्रित हो करके यह एक धागा बन करके सूत्र बन करके इन सब परमाणुओं को मानो देखो एक पिण्डाकार के रूप में वर्णित किया। आत्मा इसमें विद्यमान हो करके यह ज्ञान हो गया कि देखो प्राण परमाणुओं का आवागमन करता है **इसका नाम प्राण है।** अपान का जितना भी फेंकने का दूरिता में जितनी शक्ति है, उतना परमाणु जाता है या वृत्त जाता है तो मानो वह अपान है और व्यान मानो देखो जो सबमें रमण कर रहा है और समान

जो मुनिवरों! देखो जो सबका निरीक्षण कर रहा है और उदान मेरे प्यारे! जो उद्गम ब्रह्मा उदने प्रवाहा क्रतम जो चित्त के मण्डलों की भी प्रतिभा लाता है।

बेटा! मैं बड़े भयंकर वन में चला गया हूं, यह वन है एक प्रकार का मानो विचारों के वन में जाता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो इन प्राणों में भी जो उदान-प्राण है। **उन उदान-प्राण में एक संस्कार एक चित्त नाम का स्थान माना गया है और जो मेरे प्यारे! आन्तरिक-जगत् में आता है** और चित्त में जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं, उन संस्कारों, जो मानो देखो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के रूप में रमण करता हुआ। मानो देखो उसी में यह उदान प्रवेश हो करके मेरे प्यारे! जब इस शरीर को त्यागा जाता है। यह गृह को आत्मा त्यागता है तो उस समय मुनिवरों! देखो **मनम ब्रहे** मन और देखो यह उदान प्राण के साथ में और मन के मण्डल में चित्त का मण्डल देखो सूक्ष्म रूप से प्रवेश रहता है। जब इस शरीर को त्यागता है तो बेटा! वह एक मण्डलात्मक बन जाता है। तो विचार आता है मुनिवरों! देखो यह एक पिण्डाकार बन करके मानो सूक्ष्तम ब्रह्मां सूक्ष्म शरीर रूप बन जाता है। तो विचार आता है, मुनिवरों! देखो यह जो गृह है इसमें गृह-स्वामी है और वह गृह-स्वामी आत्मा है मानो देखो यह **प्राणम ब्रह्मा** यह उदान, समान, प्राण, व्यान प्राणों की मुनिवरों! देखो इसमें पुट लगी हुई है जो गति करता है, चिन्तन करता है, मनन करता है, वैज्ञानिक बनता है, दार्शनिक बनता है यह नाना प्रकार की आभाओं में उड़ान उड़ता हुआ नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की माला बना देता है।

शरीर का गृह

मेरे पुत्रों! देखों इस प्रकार जब इसका नृत होने लगता है तो उस नृतिका में प्रवेश इसी प्रकार देखो गृह **अनम ब्रह्मा।** जब इस मानव शरीर में इस गृह के ऊपर विचार लिया, विचारते उन्होंने देखो पंच-महा

पंचमहारूप को ले करके उन्होंने एक बाह्म इस पृथ्वी पर देखो एक गृह का निर्माण किया। जो यह शरीर का गृह कहलाता है। शरीर का गृह कौन-सा है? जहां शरीर में वह अपने में देखो उसमें वास कर सके। प्राकृतिक जो नाना प्रकार के प्रकोप है, जैसे शीतलता है, ऊष्णता है और मुनिवरों! देखो जैसे यह ऋतुएं हैं मानो देखो इसमें शरद ऋतु आती है, ग्रीष्म आती है और वसन्त आती है और मुनिवरों! इन सब ऋतुओं की रक्षार्थ के लिए वह गृह का निर्माण करता है और **गृह, अण्वणम ब्रह्मा देवत्वाम् देवो व्रव्हा।** इस गृह का निर्माण करके बेटा! देखो अपने शरीर को **वासम् ब्रह्मा** देखो शरीर को आत्मा बनाता है। इस मानो देखो गृह का जो स्वामी है, इस गृह का स्वामी और स्वामिनी मानो दोनों इसमें वास करते हैं और कहते हैं, **प्रजामयी प्रजाम भूतम् ब्रह्मा।** हे प्रभु! मानो देखो हमने इस गृह में प्रवेश किया है तो हमें अब प्रजा दे। तो वह प्रजामयी-देव की उपासना करते रहते हैं। तो विचार आता है। मुनिवरों! देखो यह ग्रह और गृह स्वामिनी के लिए दोनों ने अपने गृह का निर्माण किया। जैसे परमपिता-परमात्मा ने इस सँसार-रूपी-गृह का निर्माण किया है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जो गृह परणित हो रहे हैं यह उसको संचारित करने वाला है।

इसी प्रकार आत्मा का जो शरीर है। यह गृह यह मानव का शरीर है, यह पंच-महाभौतिक कहलाता है। इसको आत्मा संचालन करता है। और यह जो पार्थिव तत्त्वों को ले करके इसमें जल है, अग्नि है और मुनिवरों! देखो इसी में प्रार्थिवकता है, इसी में वायु है, इसी में अन्तरिक्ष है। तो मुनिवरो! देखो, इसका निर्माण उसी प्रकार का है, जैसे शरीर का निर्माण माता के गर्भ में हुआ और माता के गर्भ में इसी प्रकार निर्माण हुआ जैसे परमपिता परमात्मा ने इस सँसार रूपी ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है। तो मेरे प्यारे! एक-दूसरे को दृष्टिपात करते हुए एक-दूसरे का निर्माण हो रहा है तो निर्माण होते यह जो गृह का पंचम भूतम ब्रह्मा। यह पार्थिवकता मेरे प्यारे! देखो वह अमृतम ब्रव्हे क्रतम अवृति देवा जब

गृह का स्वामी निर्माण करता है और गृह-स्वामिनी का दोनों का अपना एक विचार विनिमय होता है–हमें एक गृह का निर्माण करे तो गृह का मानो देखो निर्माण करते। वह मेरे प्यारे! देखो उसका द्रव्य एकत्रित करता है और वह जो द्रव्य है, मानो देखो, सबसे प्रथम वह पिण्डाकार के रूप में गृह को एकत्रित करता है और पिण्डों से बहुत विशाल पिण्ड का निर्माण करता है। मेरे प्यारे! गृह एक प्रकार का पिण्ड है और उस पिण्ड में मुनिवरों। देखो जो हमारे इस मानव शरीर में गति है या ब्रह्माण्ड में गति है उसी प्रकार देखो ग्रह में भी इसी प्रकार का गति वर्ण होता रहता है। जैसे मानो देखो इसमें अन्तरिक्ष भी है, इसी में आपोमयी मानो देखो जल भी है और इसी में मुनिवरो! देखो मानो पार्थिव तत्त्व भी माना गया है। तो यह नाना प्रकार के रूपों में प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है। तो विचार आता है, वेद का वाक् कहता है **गृहणाम व्रते देवम् गृह स्वामीम् ब्रह्मा प्रजाय देवत्वाम्, प्रजम ब्रव्हा।** वह कहता है, हे गृह-स्वामी हे गृह-स्वामिनी, अब तुम देखो प्रजा की उपासना करो, हे प्रभु! तू हमें प्रजामयी दे जिसमें गृह में मानो प्रजामयी हूं मैं सन्तान को नहीं चाहता हूं, मैं प्रजा को चाहता हूं। प्रजा उसे कहते है जो मानो देखो व्यापिक रूप में देखो, वह सन्तान के रूप में भी मानो देखो, वह सन्तान के रूप में तो निर्मित है, परन्तु देखो प्रजा के रूप में व्यापकवाद है।

निर्माण करने वाला प्रभु है

तो आज विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो यह हमारे यहां यह सब ब्रह्माण्ड की ऊर्ध्वा में कल्पना मानी गई है। जैसे परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि के सृजन करने वाले ने परमपिता-परमात्मा ने बेटा सृष्टि का सृजन किया और सृजन करते हुए अःशरीर रूपी अमृत का मानो सृजन किया। यह माता ने भी किया है पिता ने नहीं किया है वह तो केवल निर्मित एक स्थान माने जाते है। मानव द्रव्य को वनस्पतियों से वह द्रव्य आता है और वनस्पतियों का द्रव्य रेतस के रूप में माता के गर्भस्थल में

प्रवेश होता है, परन्तु देखो उसी को ले करके रेतस के द्वारा परमपिता-परमात्मा जो कलाकार है अथवा निर्माण करने वाला वह निर्माण करता है। वह किस प्रकार निर्माण करता है, बेटा! कहीं बुद्धियों का निर्माण है, बुद्धि भी बुद्धि है, मेधा है, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है, मेरे प्यारे देखो, मन, बुद्धि और चित्त और अहंकार यह चतुष मानो देखो सबसे **प्रथम अन्तःकरण का निर्माण किया जाता है।** परन्तु देखो वह अन्तःकरण को जानने वाली निर्माता है और न मुनिवरो! देखो वह पुत्र है और पुत्र के चित्रों का निर्माण करने वाला निर्मित करने वाला प्रभु है। माता नहीं जानती, माता जानती तो अपने पुत्र के आन्तरिक-जगत् के उस बुद्धि को भी जानती मन को भी जानती, चित्र और अहंकार को भी जानती यह किस प्रकार का अहंकार इसमें है परन्तु माता नहीं जानती। इसलिए निर्माण करने वाला वह प्रभु है, वह चैतन्य देव है, वह निर्माण करने वाला है। तो मैं इसलिए यह कहा करता हूं, हे! ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्मा वह जो ब्रह्म है, वह वर्चस कहलाया जाता है। आज हम देखो उसी की संरक्षणता में रह करके अपने को तेजोमयी बना सकते हैं और वर्चस बना सकते हैं तो इसी प्रकार बेटा! न पिता को यह प्रतीत है जो यह कहता है मैं पिता हूं और न पिता को यह प्रतीत है कि नेत्रों का निर्माण कैसे होता है? नेत्र से तो मानो ज्योति आती है और वह एक मानो यन्त्र बना हुआ है, यन्त्र मात्र कहलाता है। तो मानो देखो ज्योति तो कहीं ओर से आती है, ज्योति के निचले विभाग मानो नेत्र गोलकना है, यन्त्र है। यन्त्र के पिछले भाग में एक और यन्त्र है, उस यन्त्र के पिछरले विभाग में एक ज्योति वर्णकेतु लिंग कहलाता है, परन्तु उससे भी पूर्व भाग में आत्मा इस शरीर में विद्यमान है, वह ज्योतिवान है। आत्मा नहीं होगी, तो शरीर का गोलकना भी है, पीला पटल भी है, उससे पिछले भाग में यन्त्र भी विद्यमान है, परन्तु देखो वह ज्योतिवान नहीं हो रहा है। तो इससे हमें सिद्ध हुआ क्या आत्मा ही ज्योतिवान है, आत्मा ज्योतियों का भी ज्योति है। जो मेरे पुत्रो! देखो नेत्रों को ज्योतिवान बनाता है, श्रोत्रों को

श्रोत्रवान बनाता है, श्रवण करने की सत्ता प्रदान करता है। तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो यह आत्मा इस गृह, गृह-स्वामी का वह गृह-स्वामी बना हुआ है, जैसे मुनिवरों! देखो इस समाज ने अपने में देखो जैसे गृह अनम ब्रहे गृह-स्वामी ने गृह-स्वामिनी ने अपना संकल्प बनाया है तो वह संकल्प कहां रहता है बेटा! वह संकल्प मानो वाणी में नहीं रहता वाणी तो मानो यन्त्र है उच्चारण करने के लिए वाणी के पिछले विभाग में एक यन्त्र है, जहां मानो कहीं से सूचना आती है वह सूचना एक केन्द्र है और केन्द्र मानो देखो सूचना भी वह प्रेरणा नहीं है, वह संकल्प शक्ति नहीं है, उससे पिछले भाग में मानो देखो प्राणस्तव और मनस्तव है, मानो देखो वह भी एक वायु का और देखो एक प्रकृति का रूप है, परन्तु जो आत्मा देखो जिसके प्रकाश से संकल्प करता है, उसका नाम आत्मा माना गया है। तो बेटा! हम आत्मा के ऊपर चले जाए तो विचार आता है कि संकल्प का स्वामिनी जब गृह-स्वामिनी और गृह-स्वामी जब गृह का निर्माण का संकल्प करते हैं तो संकल्प भी आत्मा से होता है अथवा आत्मा और गृह मानो दोनों का समूह होता है, गृह जो है अमृतम ब्रह्मा, वह जो हृदय है, हृदय ही मानो देखो आत्मा का दूतक है आत्मा से प्रकाश और क्रतियों को लेकर वे परमात्मा के हृदय से हृदय का जब समन्वय होता है तो बेटा! देखो वह संकल्प पूर्णता को प्राप्त होता है। **संकल्प प्रमणाव्रतम देवत्वाम** जैसे माता-पिता का संकल्प माता-पिता का पुत्र है, पुत्रिया है, ऐसे गृह है, मानो देखो वह पिण्डम ब्रह्मा देखो पिण्डोसे पिण्ड का निर्माण हो रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, जब तू विज्ञानवेत्ता बन करके इसका निर्माण करता है, तो पिण्डो से पिण्डो का निर्माण करता है, मानो रेतस से रेतस का निर्माण करता है। उग्र से उग्र का निर्माण करता है।

मेरे प्यारे! देखो आज मैं प्रभु की महिमा का कहां तब वर्णन करूं विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो इसी प्रकार हमारा जो गृह है और गृह-स्वामिनी है उसमें प्रवेश करने का यह कहा कि हे गृह-स्वामी तू

इसमें प्रवेश कर मानो देखो जैसे आत्मा का जब देखो माता के शरीर, माता के गर्भ में प्रवेशिकण भूतम् ब्रह्मा आत्मा प्रवेश करता है, इसी प्रकार जब यह भौतिक गृहो के निर्माण होते हैं, यहां आत्मा के सहित पंच-महाभौतिक पिण्डो वाला गृह-गृहस्वामी बन करके उसमें वास करते हैं, जैसे परमपिता-परमात्मा स्वयं मानो देखो गृह का निर्माण होता है, सँसार रूपी जब ब्रह्माण्ड का, गृह का निर्माण हुआ तो वह इसको संचालन करता है, इसको मानो देखो गतिवान बनाता है और वह पंच-महाभूतों के द्वारा गतिवान है, परन्तु देखो वह जो नियमन करने वाला है वह चैतन्य देव कहलाता है। अरे! नेत्र तो मानो दृष्टिपात करते हैं और वह जो नियमन करने वाला है वही तो आत्मा है, मेरे प्यारे देखो लोक-लोकान्तर गतिया कर रहे हैं पंच-महाभूतों के रूप से परन्तु नियमन करने वाला वह चैतन्य-देव कहलाता है। जैसे मानो सूर्य अपनी आभा में गमन कर रहा है तो गमन तो कर रहा है परन्तु नियम में धारण करने वाला अपने अमुख समय में सूर्य का उदय होगा, अमुक समय पर रात्रि का आवरण आ करके रात्रि आ जाएगी चन्द्रमा में उसकी प्रतिभा उसमें निहित हो जाएगी, चन्द्रमा अमृत बिखरेगा, सूर्य उस समय देखो रात्रि उसके आवरण में प्रवेश हो जाएगा तो मानो यह कौन नियमन कर रहा है। बेटा! वही तो नियमन करने वाला चैतन्य देव कहा जाता है।

प्रजा की उपासना

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने आया हूं। विचार-विनिमय केवल यह क्या हम मुनिवरों! देखो गृह-स्वामी और गृह-स्वामिनी अपने गृह में मानो देखो प्रजा की उपासना करे और कहे प्रजा में ही ब्रह्मणा प्रजा में ही देवत्वाय प्रजाम भूतम् ब्रह्मा मानो देखो हे प्रजाओ! आओ तुम मेरे गृह में वास करो और प्रजा उसे कहते हैं, जो सु-क्रियाकलाप करने वाला बाल्य, बालिका के रूप में होते है। वह एक समय प्रजा बन करके रहते है और वही मानो देखो

समाज का कल्याण, निर्माण और समाज में मानो देखो अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करते रहते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूं केवल यह कि आज हम बेटा! देखो अपने इस परमपिता-परमात्मा के अनूठे ज्ञान को तारतम्य रूप से विचार-विनिमय करते रहे। इसका मानो स्वामी देखो स्वामिनी दोनों देखो एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं।

मानो न किसी कोई का आत्मा पुत्र होता है न पुत्री होता है परन्तु देखो सामाजिक जैसे भौतिक पिण्ड यह सँसारम ब्रह्मे यह गृह का निर्माण पिण्ड के द्वारा होता है। इसी प्रकार पिण्डों के नामों के उद्गीत गाये जाते हैं। तो मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता-परमात्मा की अराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सँसार सागर से पार होने का प्रयास करे जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता में प्रवेश करता रहे। एक जीवन सत्ता को प्राप्त करता रहे और अपने में हम स्वामी अपने शरीर के स्वामी बन करके आत्म भूतम ब्रह्मा **देखो आत्मा को जानते रहे और आत्मा के द्वारा परमात्मा को जानते रहे।** यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या वेद का मन्त्र बेटा! अनूठे-अनूठे उपदेश देता है उसे हमें धारण करना है और सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाए कल प्रगट करूंगा।

ओइम् देवा आभ्याम् मनुगायन्तवा रथम्माहम् ग्रहे वरुणा देवाः वाचनम्ः।
ओइम् यज्ञश्चारवितन्ना रथम आपाः।

अच्छा भगवन्

दिनांक : २०-१-१९९२
स्थान : हापुड़।

॥ ओ३म् ॥

शिव

महाराजा शिव ने एक समय ताण्डव नृत्य किया। माता पार्वती और शिव दोनों ने जब वह ताण्डव-नृत्य किया तो उसमें से शब्दों और स्वरों का संगम, स्वरों की ध्वनियाँ उत्पन्न होती रहीं। परन्तु यह विचार तो बहुत पुरातन काल में भी आया है। आज भी एक वेद-मँत्र आ रहा था, 'शिवः सुन्दरं ब्रव्हे कृतव प्रवाहं ब्रहे' मानो वह तो शिव है, उसके हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। शिव नाम राजा को कहा गया है और शिव नाम परमपिता परमात्का का भी वाची है और शिव नाम उसको कहा जाता है जो ब्रह्मवचोसी अपने में जो आधिपत्यवादी होता है, उसको भी शिव कहते हैं। **जो सङ्कल्पवादी होता है जिसका सङ्कल्प महान् बना करता है, वह शिव कहलाता है।** हमारे वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची की विवेचना होती रही है। शिव नाम सूर्य का भी है, जो प्रकाश देने वाला है। यहाँ 'शिवम् ब्रह्मणा वृत्तम्', राजा का नाम शिव कैसे कहलाता है, यह प्रसंग आता है।

हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जहाँ शिव का वर्णन आता है वहाँ विद्यालय में ब्रह्माचारियों से शिव-सङ्कल्प कराते हैं और कहते हैं कि–''हे ब्रह्माचारियो! तुम्हें शिव सङ्कल्पवादी बनना चाहिये।'' विचार आता है कि शिव का कैसा वह सङ्कल्प है, जो शिव सङ्कल्पवादी कहलाता है। हमारे यहाँ नाना प्रकार का विचार-विनियम होता रहा है, परन्तु विचार यही आता है कि शिव नाम राजा का है और उस राजा का नाम शिव कहलाता है, जो हिमालय का राजा है। वह ऊँचा है, वह महान् है।

इसी प्रकार राजा अब अपने राष्ट्र में प्रजा को सङ्कल्पवादी बनाता है और वह कहता है कि–''हे प्रजाओ! आओ तुम अपने में सङ्कल्पवादी बनो।'' प्रजा इतने ऊँचे विचारों की होनी चाहिये, जैसे कैलाश मानो 'सर्वतां रोहणी वृत्तम्'। हम कैलाश की उपमा देते रहें और यह उद्गीत में गाते रहें कि शिव को राजा कहते हैं और वह राजा जिसकी प्रजा शिव सङ्कल्पवादी होती है, वह राजा शिव कहलाता है, जिसकी प्रजा में एक महानूता की ज्योति जागरूक रहती है। जैसे हिमालय ऊँचा होता है, वैसे उर्ध्वा में विचारवेत्ता को ही हिमालय से तुलना कर सकते हैं।

विचार आता रहा है कि उस राजा का नाम शिव है, जहाँ प्रजा इस प्रकार उर्ध्वा में विचारवान हो जिन विचारों में महानूता की ज्योति जागरूक हो जाती है। वह हिमालय के तुल्य होनी चाहिये, जिससे वह उर्ध्वा में गमन करता है। वह 'शिव सङ्कल्प ब्रह्मणा वृत्तम्।' **हमारे यहाँ, राजा को जहाँ शिव की उपाधि प्रदान की है, वहाँ परमपिता परमात्मा का नाम भी शिव कहलाता है। वह प्रजा का स्वामित्व और वेद-मन्त्रों का आधिपत्य करने वाला हो और प्रत्येक प्राणी के हृदय में महानूता की एक प्रेरणा जागरूक होती हो। ऐसा जो प्रजा का नेतृत्व करने वाला है, उसे शिव कहते हैं। हमारे यहाँ शिव अपने में सङ्कल्पमयी कहलाता है।**

मुझे स्मरण आ रहा है कि एक समय महर्षि शिकामकेतु उद्यालक याग कर रहे थे, तो कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि शोभनी मुनी महाराज आ पहुँचे और उन्होंने कहा कि–हे देवत्तम्! हे उद्यालक! तुम्हारे गृह में तुम्हारे मध्य में ऐसे एक देवता ने जन्म ले लिया है, ऐसे महादेव का जन्म हुआ है, जिस को विचारते-विचारते मानो तुम थकित हो जाओगे। महर्षि शिकामकेतु ने कहा–प्रभु! वह देवता कौन सा है, जो हमारे मध्य में उत्पन्न हो गया है? उन्होंने कहा–वह देवता, याग है, वह यज्ञ है।

देखो, यह ऐसा महादेव है, जिसके चारों चार शृंग कहलाते हैं, मानो देखो सप्त हस्तवाला है, सप्त हस्तवाला कहलाता है, और इसके चार सिर कहलाते हैं। ऋषि ने कहा—प्रभु! यह कैसे? उन्होंने कहा—वेद का मन्त्र कहता है, 'चारे शृंग जिमि कृतां सप्त होतां ब्रह्मे महादेवः' ऐसा वो महादेव है, जो सप्त होताओं वाला है। मानो देखो सप्त होता कहते हैं, जो सात आहुति देने वाले हैं, उनको मानो होता कहते हैं। और वो कौन-सा देव है? मानो देखो, 'चारम्ब्रह्मणे देवं ब्रह्मः' सप्त होता कौन से हैं? बेटा! देखो, ये देवता हैं, जैसे जमदग्नि, वशिष्ट आदि, ये सब देवता कहलाते हैं। यह ऋतुओं का ग्रह-विधान कहलाया गया है। मानो देखो ऐसा महादेव है, जो तुम्हारे मध्य में विद्यमान हो गया है। चार शृंग हैं उसके। मानो देखो चार क्या हैं? देखो, यजमान, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा बनकर के, ये चार उसके शृंग कहलाते हैं, जो सिर हैं, वे उस महादेव की प्रतिभा में निहित रहते हैं। रहा यह, 'किं ब्रह्मेः' मानो ऐसा कौन-सा देवता है? बेटा! वो याग है, जो 'यागां ब्रह्मणे वृत्तम्', मानो वेद का मन्त्र कहता है, ऐसा एक महादेव तुम्हारे मध्य में विद्यमान हो गया है, जो देवताओं का भी देवता है। जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, वह, उसका, याग का मुख कहलाता है और वो देवताओं को चरि प्रदान करने वाला है, इसलिए पञ्चहस्त हैं। उसके पाँच हस्त कहलाते हैं। मेरे प्यारे! विचार-विनियम क्या? अलंकारिक विचारों को देते हुए ऋषि ने कहा कि ऐसे महादेव की हमें पूजा करनी है। ऐसे महादेव को हमें नमः होना है। मेरे प्यारे! इसीलिए 'शिवत्रं ब्रह्मः'। 'शिव' नाम, बेटा! परमात्मा का, शिव नाम आत्मा का, और शिव नाम राजा का है, जो अपना शासन कर रहा है। और शासन-प्रणाली में विद्यमान हो करके मानो देखो वह अपने में रत्त हो रहा है। 'शासनां ब्रह्मे' मानो देखो शिव नाम, जब हम रेजोगुण में 'प्रधीः अर्पणाकृते', जब

हम रजोगुण में अपने में समाहित हो जाते हैं तो अपने में अपनेपन को ही शासन में, अनुशासन में परिणत होते हुए मानो वहाँ योग की अवस्था आ जाती है। **पाँच ज्ञान-इन्द्रियों और कर्म-इन्द्रियों को जो संयम में लाने वाला है, वहा महादेव कहलाता है, वह शिव कहलाता है। जो अपने में संयम करता है, प्रत्येक इन्द्रियों को, वह शिव बन करके अपने में अपनेपन को अपने में ही दृष्टिगत् करके मानव मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है।**

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब वेद का वाक्य हमें स्पष्टीकरण करता है, उसके ऊपर हमें बारम्बार विचार-विनियम करना चाहिए। विचारना चाहिए कि हमारे यहाँ राजा को भी शिव कहा जाता है। कौन सा राजा शिव है? इस सम्बन्ध में, मैंने बहुत पुरातन काल में एक विवेचना की है। **बेटा! देखो, उस राजा का नाम शिव कहलाता है, जो अपने में मन-वचन-कर्म को एकाग्र करके देखो, ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करने वाला और राष्ट्र का पालन करने वाला है।** जो राजा और प्रजा में, अपने में और प्रजा में कोई अन्तर्द्वन्द्व स्वीकार नहीं करता है, वह एकोकीकरण लाने में तत्पर रहता है, उस राजा का नाम शिव कहलाता है। जिस राजा के राष्ट्र में प्रजा, ऊर्ध्वा-विचारों वाली हो, संकीर्णता का मानो देखो नामोकरण वहाँ नहीं होना चाहिए। ऐसा जो शिव है, 'मंगल ब्रह्मे' वह राजा कहलाता है, **जिस राजा के राष्ट्र में देखो वेद-मन्त्रों का उद्घोष हो, और राजा स्वयं भी उद्घोष करने वाला हो, देखो, ऐसा राष्ट्र महादेव और ऐसा राजा शिव कहलाता है। तो हम उस शिव की पूजा करें। पूजा का अभिप्रायः यह है कि उसको अपने में धारण करें।**

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

मानव को यज्ञ की प्रेरणा

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। आज हम पुनः की भाँति कुछ वेद मन्त्रों का गान कर रहे थे। आज से पूर्व मैंने कहा था कि हम संहिताओं का पाठ कर रहे हैं। आज मुझे इस विवाद में नहीं जाना है कि वेद-सँहितायें कितनी हैं। हमें तो आज यह उच्चारण करना है कि यह वेद ज्ञान क्या पुकार रहा है? आज हमें पुनः से वेद रूपी वेदी पर आ जाना है। जो हमें मानव बनाने के लिए बारम्बार संकेत दे रही हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से यह वेदी पुकारती चली आ रही है कि हे मानव! तू वास्तविक मनुष्य बन जैसा मेरा यह वेद कहता है। इस वेद वाणी के अनुकूल अपना जीवन बना।

मुनिवरो! महानन्द जी का संकेत बारम्बार प्राप्त हो रहा है। जैसा कल मैंने यज्ञ के सम्बन्ध में कहा था आज भी यज्ञ के सम्बन्ध में प्रकाश दूंगा।

मुनिवरों! आज हमें यज्ञ वेदी पुकार रही है कि मानव! तू पुनः से इस यज्ञ वेदी पर आ। इस वेदी पर आ जाने से तेरा वास्तविक कल्याण होगा। तू मानव को मानव बना सकता है और अपनी मानवता को ऊँचा बना करके सँसार पर तू शासन कर सकता है। जिस यज्ञ वेदी को हमारे ऋषि मुनियों ने प्रज्वलित किया है, जिस अग्नि में अपने जीवन की आहुतियाँ दी हैं अपने कँठ की वाणी को इस यज्ञ वेदी पर बलि देकर इस सँसार को ऊँचा बनाया है, आज पुनः से इस यज्ञ वेदी पर आ जाना है।

हे मानव! तेरा यज्ञ क्या है?

मानव! तेरा यज्ञ शुभ कर्म है। तेरा यज्ञ तेरा धर्म है। हे मानव! तेरी सात्विकता तेरा यज्ञ है। तेरी विचित्रता तेरे सदाचार में है। जब तक तेरे द्वारा सदाचार नहीं आएगा तू यज्ञ वेदी पर आने योग्य नहीं। आज यज्ञ वेदी पुकार रही है कि हे मानव! यदि तू मेरे द्वारा आना चाहता है तू तो चरित्रवान बन करके आ। तू ओजस्वी और तपस्वी बनकर के आ और मुझे प्रज्वलित कर।

आज मानव को यज्ञ वेदी पर आ जाना है। जिस यज्ञ वेदी पर आ करके वर्णव्यवस्था बनती है। जिस वेदी पर आकर के मानव के हृदय में राष्ट्र के कल्याण के लिए भावनाएँ आती हैं। जिस वेदी पर आ करके मानव के हृदय में सात्विकता आ करके सँसार के कल्याण करने के लिए अपने जीवन को प्रेरित कर देता है। आज मुझे पुनः से यज्ञ के सम्बन्ध में उच्चारण करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है और समय मिलेगा तो आगे भी यज्ञ के सम्बन्ध में उच्चारण करता चला जाऊँगा।

मुनिवरो! यह वह यज्ञ वेदी है, यह वह वेद का ज्ञान है जिस ज्ञान की पताका को महाराज वशिष्ट मुनि महाराज, महर्षि पापड़ी मुनि महाराज और विश्वामित्र ने लेकर के विश्व को ऊँचा बनाया। यह आज हमारी वेदी है। इस पर हमें विचारना है। हमें पुनः से उस अग्नि को प्रज्वलित करके हमें उस अग्नि को सूर्य तक, चन्द्रमा तक, बृहस्पति और ध्रुव लोकों तक पहुँचाना हैं।

मुनिवरो! आज यह नहीं कि सँसार में ही इस यज्ञ वेदी का प्रसार करें। मैं तो प्रभु से कहा करता हूँ हे प्रभु! मेरे में वह महत्ता और सत्ता दो की मैं इस यज्ञ वेदी को यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर सँसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुवमँडल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। यज्ञमय मेरा जीवन हो।

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या का जीवन परमात्मा ने यज्ञ वेदी के लिए दिया है। आज हमें यज्ञ वेदी को उत्पन्न करना है। शाँत अग्नि को प्रज्वलित करना है, ज्योति देना है जो अग्नि हमें सूर्य और चन्द्रमा तक पहुँचा दे।

मुनिवरो! देखो 'यज्ञाः'। यह वह यज्ञवेदी है जिस पर आ करके मानव-मानव बनता है। पापी भी मानव बनता है। दुराचारी भी सदाचारी बनता है। हे मेरे प्यारे भद्र पुरुषों! आओ। इस यज्ञ वेदी पर आकर अपने सदाचार को अपनाओ। यज्ञ वेदी पुकार रही कि हे मानव! तू दुराचारी बन करके मेरे द्वारा न आ। यदि दुराचारी बन करके आयेगा तो हे मानव! मैं दूर से ही तेरी उस कल्पना को भस्म कर सकती हूँ जिसे तू लेकर आया है। आज तुझे सँकल्प को धारण करके मेरे द्वारा आना है। सँकल्प लेकर जायेगा तो आज मैं तुझे मृत मँडल में नहीं ध्रुव मँडल तक पहुँचा सकती हूँ। आज सदाचार को अपना कर पुनः से यज्ञ वेदी पर आना है।

सदाचार को अपनाकर वर्णव्यवस्था को ऊँचा बनाना है। जैसा ऋषि मुनियों ने हमें आदेश दिया है। बहुत काल हुआ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझसे कहा करते थे कि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या, प्रत्येक ऋषिमँडल का कर्तव्य है कि अपनी यज्ञ वेदी की रक्षा करें। यह यज्ञ वेदी क्या है? वह यज्ञ वेदी हमारी परम्परा है। हमारी सँस्कृति, हमारा धर्म और ज्ञान है। आज हमें इस यज्ञ को ऊँचा बनाना है। इसकी रक्षा करनी है। हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो जिससे विधाता! हम सँसार रूपी महान वेदी की रक्षा कर सकें। जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं, हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं, विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का आज मेरे द्वारा न आये। वह खरदूषण मेरे द्वारा न आयें। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके इसकी रक्षा करें। आज उस भगवान राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा

होती है। दैत्यों को शाँत किया जाता है। आज हमें भगवान् राम बनने की आवश्यकता है।

मुनिवरो हम भगवान् राम तब तक नहीं बनेंगे जब तब हमारे द्वारा चरित्र न होगा। जब तक हमारे द्वारा गुरु परम्परा न होगी। हमारी परम्परा क्या है? वह है यज्ञ वेदी जिसमें वर्णव्यवस्था का विधान बनाया जाता है। जिसमें मानव के कल्याण का विधान बनाया जाता है। यह वह यज्ञ वेदी है। इसकी रक्षा करना प्रत्येक मानव और प्रत्येक देवकन्या का कर्तव्य है। उसके लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर देना है।

आज हमारे वेद-मँत्र क्या कह रहा था? आज हमारी यज्ञ वेदी हमें क्या-क्या पुकार करके कह रही है? आज पुनः से हमें उस क्षेत्र में जाना है जो वास्तविक है। आज मुझे सौभाग्य मिल रहा है कि इस शुभ अवसर पर यज्ञ वेदी की प्रशँसा करने आया हूँ। महानन्द जी से मुझे यज्ञ की प्रेरणा मिल रही है। उनकी प्रेरणा के आधार से आज मैं यज्ञ वेदी की प्रशँसा करने जा रहा हूँ।

मुनिवरो! यह वह यज्ञ वेदी है कि जहाँ ब्रह्मा विराजमान हो करके यजमान को, होताओं को देखता है कि यह शूद्र तो नहीं है। यह होता है, ब्राह्मण है और यह वैश्य है। मेरे पूज्यवाद गुरुदेव ने मुझे निर्णय कराया था कि आज तुम्हें यज्ञवेदी पर जाना है। सदाचार और विज्ञान को अपनाना है। जिस विज्ञान से तू मानव को जान सके कि यह कौन से वर्ण का है। यह मेरी प्यारी माता कौन से वर्ण में जाने योग्य है। आज तू यज्ञ वेदी पर ब्रह्मा तो बनने जा रहा है परन्तु सबसे पूर्व तुझे यह विचारना है कि यह कौन है जो तेरी यज्ञ वेदी पर विराजमान है, शूद्र है, क्षत्रिय है या वैश्य है।

मुनिवरो! देखो यहाँ शूद्र कौन कहा जाता है? मुझे आज से बहुत पूर्व काल में ऋषियों ने विशेषकर मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह प्रेरणा दी थी कि शूद्र वह होता है जो दूसरे व्यक्तियों की रक्षा नहीं करता, दूसरे

जीवों का भक्षण कर जाता है। सदाचारी क्षत्रिय, वैश्य वह होता है जो दूसरों की रक्षा करता है। प्राणीमात्र की रक्षा करता है। वह यज्ञ वेदी पर आने योग्य है। आज वह यज्ञ वेदी पर आने योग्य नहीं जो अपनी रसना के आनन्द में सब धर्म-कर्म त्याग बैठा है।

हे मानव! यदि पापी बनकर के यज्ञ वेदी पर आयेगा तो वह यज्ञ वेदी तुझे ऐसे भस्म कर देगी जैसे अग्नि ईधन को भस्म कर देती। ऐसे ही तेरे पाप मूल बन जायेंगे। आज तुझे यज्ञ वेदी पर आना है तो सदाचार को अपना कर आ। तू सँकल्प धारण करके आ कि मैं आज प्रतिज्ञा करने जा रहा हूँ कि दूसरे जीवों का भक्षण नहीं करूँगा। जो अपने उदर की पूर्ति के लिए दूसरे जीवों का भक्षण करता है वह मानव नहीं कहा जाता। वह सँसार में दुराचारी और शूद्र कहा जाता है। क्षत्रिय और वैश्य वह होता है जो अपने राष्ट्र के लिए, यज्ञवेदी के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करने वाला हो। वह सँसार में सदाचारी कहलाता है। मुनिवरो हमें सदाचारी बन करके ब्रह्मा के समीप आ जाना है जो ब्रह्मा ऊँचा आदेश देकर नियमों के अनुकूल कार्य से प्रेरित करता है।

हे ब्रह्मा! तू वास्तविक ब्रह्मा है। तू यज्ञ वेदी पर आ करके विधान बनाने वाला है। आज तू पुनः से यज्ञ वेदी पर आ करके नियम बना। जो वास्तविक नियम है। महाराजा रघु के यहाँ यज्ञ हुआ। सब ब्राह्मण आये। ऋषि-मुनियों को चुनौती दी और उन ऋषि-मुनियों को ब्रह्मा की उपाधि प्राप्त करायी गयी जो यह जानते थे कि जो यज्ञ वेदी पर यजमान, होता अध्वर्यु और उद्गाता चुना है वह कैसा है? वह किस भाव का है? कैसा इनका चरित्र है? यह सब कुछ योगी लोग जान लेते हैं। आज तुझे अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए और दूसरों के जीवन को जानने के लिए तुझे अपने मनोविज्ञान को जानना है। आज तुझे उस मस्तिष्क विज्ञान को जानना है जो हमारा आयुर्वेद कह रहा है। हमारी सँहिता पुकार कर कह रही है हमारा वेद मँत्र पुकार रहा है तुझे वेद के प्रत्येक मँत्र पर विचार करना है और उसको अपनाना है। वह तेरा

गहना है। हे ब्रह्मा तेरा गहना क्या है? तेरा गहना यज्ञ वेदी है। तेरा गहना वेद है। तेरा गहना है प्रकाश। तू मानव को ऊँचा बना सकता है। तू यज्ञ वेदी पर वह आदेश दे सकता है कि मानव यहाँ से उठकर सूर्य मँडल, चंद्र मँडल, ब्रहस्पति मँडल, ध्रुव मँडल और अरुणि मँडल तक पहुँच सकता है। आज तुझे पुनः से विचार लगाकर चलना है। तू आज उस यज्ञ वेदी पर आया है जो वेदी परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न की थी। आज सदाचार को अपनाना है। वीरता का अपनाना है। अपने उस ब्रह्मचर्य को अपनाना है जिस ब्रह्मचर्य से मानव ब्रह्म में विचरण करता है। वह यज्ञ वेदी उसे अपनी गोद में धारण कर लेती है और गोद में धारण कर परमपिता परमात्मा से मिलान करा देती है। मुनिवरो देखो! आज प्रत्येक मानव उस यज्ञ वेदी पर आया है। आज हमें पुनः से विचारना है कि हमें उस यज्ञ वेदी की रक्षा करनी है।

मुझे आज से पूर्व महानन्द जी ने कहा था कि आज का सँसार यज्ञ वेदी से दूर जा रहा है। हे मानव! तुझे यज्ञ वेदी से दूर नहीं जाना है। तुझे वेदी पर आना है। तू भौतिक यज्ञ वेदी से तो दूर भाग रहा है परन्तु हम तब जानेंगे जब तू परमात्मा की उत्पन्न की हुई यज्ञ वेदी से बाहर चला जायेगा। आज परमात्मा ने सँसार रूपी यज्ञ वेदी को रचा है। इसका ब्रह्मा भी स्वयँ बना हैं। यजमान आत्मा बना है। उद्गाता और अध्वर्यु सूर्य और चन्द्रमा है। आज मानव! तू कहाँ है? आज तुझे इस यज्ञ वेदी से बाहर जाने का कोई अवसर ना मिलेगा।

हे मानव! तू आज अपने सदाचार को अपना कर स्वयँ यज्ञवेदी पर आ जा। इस अग्नि को हमारे ऋषि मुनियों ने प्रज्वलित किया है। यह अग्नि हमें प्रकाश देती है। यज्ञशाला में विराजमान होकर के हमें प्रेरित करती है कि हे मानव! जैसे **मैंने इस नाना घृत और सामग्री को भस्म किया है इसी प्रकार तू भी अपने अवगुणो को भस्म करके तू भी सँसार में वास्तविक बन।** आज तू भी वह अग्नि बन जो कि जो भी तेरे द्वारा आ जाये उसके पाप समाप्त हो जाएँ।

आज तू सँसार के एश्वर्य की कल्पना करता है। आज तू नाना प्रकार के आसन की आशा कर रहा है परन्तु यह यह आसन न तेरे आदि में हैं और न अन्त में हैं। आज तू उस सँकल्प को धारण कर जो तेरे आदि और अंत दोनों में हों। वह तेरा वास्तविक आसन क्या है? वह है यज्ञवेदी। **हे मानव! तू इस यज्ञ वेदी पर पहुँच जिस वेदी पर पहुँचकर इन नाना प्रकार के अवगुणों को ईधन की तरह ज्ञान अग्नि में भस्म कर देगा।** तू उस कल्याणकारी मार्ग में पहुँच जायेगा जो तेरा वास्तविक मार्ग है। जिस मार्ग पर जाने से तेरा वास्तविक कल्याण होगा। जब हमारा आत्मिक बल ऊँचा न होगा, मानवता हमारे द्वारा न होगी, ज्ञान अग्नि हमारे द्वारा न होगी, यज्ञ अग्नि प्रज्वलित करने की सत्ता हमारे द्वारा न होगी और वर्ण व्यवस्था स्थापित करने की सत्ता न होगी तब तक हम मानव नहीं कहलायेंगे। न हम ब्रह्मा हैं और न हम ऋषि हैं न हम आत्मज्ञानी। आत्मज्ञानी सँसार में वह होता है जिसको सँसार का पूर्ण ज्ञान होता है। आज सँसार में आत्मज्ञानी बनना है। आज हमें भौतिकवाद के मार्ग पर नहीं जाना है। हमें उस मार्ग को अपनाना है जिससे मानव का कल्याण हो। जिस मार्ग को अपनाकर यहाँ से हमारे ऋषि मुनि चले गये हैं उस मार्ग को पुनः से अपनाना है।

मुनिवरो! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जिस समय प्राणों को त्यागा था तब वे यज्ञ वेदी पर विराजमान थे। उनका हृदय मग्न हो रहा था। मुग्ध होते हुए अपने प्राणों को त्यागा था। हृदय मुग्ध वाले मनुष्य यहाँ से जाकर सूर्यलोकों तक पहुँच जाते हैं और वहाँ भी अपने उसी कर्तव्य का पालन करते हैं जो वे यहाँ करते थे। त्याग तपस्या से अपने जीवन को ऊँचा बनाते हैं। ज्ञान रूपी अग्नि को प्रज्वलित करते हैं उन कँदराओं में जिनमें अँधकार होता है।

आज हमारा जो यह शरीर है यह अँधकार रूपी गुफा है। इस गुफा में वह अग्नि प्रज्वलित करनी है जिससे यह गुफा न रहे परन्तु ऊँचा सुहावना गृह बन जाये, जहाँ हमें आनन्द प्राप्त हो। इसमें ज्ञान रूपी

अग्नि को प्रज्वलित करना है और वेदों को अपनाना है। वेद रूपी प्रकाश से हमारा वास्तव में कल्याण होगा।

आज हम दूसरों को तब ही ऊँचा बना सकते हैं जब हमारे द्वारा चरित्र होगा। हमारे द्वारा मानवता होगी। हमारे द्वारा ज्ञान रूपी अग्नि होगी। अन्यथा मेरे जैसे यहाँ नाना उच्चारण करके चले गये हैं परन्तु यह सँसार उसी स्थान पर रहा जहाँ रहता चला आया है।

आज मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी से सँकेत मिला है कि आधुनिक सँसार किस मार्ग पर जा रहा है! यहाँ न वर्ण व्यवस्था है न मानवता है। आज दूसरे जीवों का भक्षण करके अपने उदर की पूर्ति करता चला जा रहा है। आज इस मार्ग को नहीं अपनाना है।

हे मानव! यदि तू परमात्मा की सृष्टि में आया है तो परमात्मा के अनुकूल कार्य कर। परमात्मा तुझे जो प्रेरणा देता है उसके आधार से चल अन्यथा अपने जीवन को शान्त कर दे और परमात्मा की सृष्टि में न आ। ऊँचा बनने के लिए परमात्मा ने तुझे सब कुछ सामग्री दी है। आज तू दूसरे जीवों का भक्षण करने वाला क्यों बन रहा है। तू रक्षा करने वाला बन। आज वह रक्षा कर कि सिंह तक तेरे चरणों में आ जायें। आज वह रक्षा कर कि जिन जीवों का तू भक्षण करता है वह तेरी रक्षा के लिए स्वयँ उद्यम हो जाएँ। जिसकी तू रक्षा करेगा वह स्वयँ तेरी रक्षा करेगा। सँसार में जो गौ की रक्षा करता है गौ उसे दुग्ध देती है। आज जो भी जिसकी रक्षा करता है वह स्वयँ ही उसका साथी बन जाता है और साथी बन करके हर समय उसके कल्याण की सोचता रहता है। हे मानव! तुझे अहिंसावादी बनना है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(पुष्प संख्या-7–दिनाँक-8 नवम्बर 1963, नई दिल्ली)

॥ ओ३म् ॥

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

अस्मि

श्रीमति नेहा त्यागी व श्री अँकुर त्यागी जी निवासी ग्राम चरथावल, जि. मुजफ्फर नगर ने अपनी पुत्री आयुष्मती **अस्मि** के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर 1101 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। समिति उनके इस उदार एवम् जनकल्याण के कार्य के लिए दिये गये सहयोग का हार्दिक धन्यवाद करती है और पुत्री एवम् समस्त परिवार के लिए दीर्घ आयु, सुख, शान्ति, सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

॥ ओ३म् ॥

स्मृति

पूज्यपाद गुरुदेव की अमृत वाणी को साहित्य रूप में प्रकाशन करने की गति को निरन्तर धारा प्रवाहित रखने के लक्ष्य से 2101 रुपये का सात्विक दान श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी हापुड़, जि. गाजियाबाद, उ.प्र. ने बड़े विनम्र भाव से अपने पिताजी, स्व. श्री आर. के. त्यागी जी के जन्मदिवस के शुभअवसर पर समिति को प्रदान किया है। श्री त्यागी जी मूल से ग्राम बीटा, जि. बुलन्दशहर के निवासी हैं और अपनी शिक्षा प्राप्ति के पश्चात एफ.सी. आई. की सेवा में सँलग्न हो गये। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से प्रारम्भ में ही जुड़ गया और उनके प्रवचनों का अध्ययन करते हुए दैनिक याग को अपने गृह में निरन्तर सम्पन्न कर रहा है। श्री आर. के. त्यागी जी को अपने गृह पर भी पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में अनेक बार परिवार सहित वेद पारायण याग कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री त्यागी जी एफ.सी.आई. में पूरी निष्ठा व ईमानदारी से अपना कार्यकाल पूर्ण करने के पश्चात् सेवा निवृत्त होने पर पूर्ण रूप से आध्यात्मिक क्रियाकलापों में अपने परिवार सहित सँलग्न हो गये और उसी धारा को ऊर्ध्वा गति देते हुए उन्होंने हापुड़ में सार्वजनिक रूप से चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग व वेद ब्रह्म पारायण महायाग भी सम्पन्न कराये। उसी ज्योति को निरन्तर गतिवान रखते हुए सारा परिवार आदरणीय श्रीमति सुमित्रा देवी जी की छत्र-छाया में तन-मन-धन से लगा हुआ है।

समिति परिवार के निरन्तर सहयोग के लिए सभी का हृदय से धन्यवाद करती है और परम पिता परमात्मा से परिवार के सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

॥ ओ३म् ॥

श्रद्धा-सुमन

स्व. श्री अतुल त्यागी

परमपिता परमात्मा की अद्भुत सृष्टि का चक्र स्वतः निरन्तर गतिशील रहता है और उसी प्रक्रिया में मानव का मिलन व वियोग भी में सक्रिय बना हुआ है। इस विचित्र लीला को दृष्टिपात करते-करते मानव स्वयं भी उसी में अदृश्य हो जाता है। इसी जीवन लीला के क्रम में दिनांक 7 जुलाई, 2012 को श्री अतुल त्यागी, सुपुत्र स्व. श्री शिवराज सिंह त्यागी, निवासी ग्राम खररवौदा, जि. मेरठ अपने नश्वर शरीर को त्यागकर परमपिता परमात्मा की गोद में चले गये। श्री त्यागी जी भारतीय नौ-सेना में 20 वर्ष तक सेवा करने के पश्चात कैप्टन के पद से सेवा निवृत्त होकर, आजकल अपने परिवार के साथ नोएडा में निवास कर रहे थे। त्यागी जी के दो पुत्रियाँ हैं–बड़ी पुत्री अमेरिका में अपनी शिक्षा पूर्ण करके अपनी नौकरी शुरू करने जा रही है और छोटी पुत्री देहरादून में एम.बी.बी.एस. कर रही है।

श्री त्यागी जी के पिता जी पूज्यपाद गुरुदेव के प्रारम्भ से ही अनन्य भक्त थे और अपनी परम श्रद्धा के फलस्वरूप ही उन्होंने अपनी पत्नी व उनकी माता जी को प्रेरित करके उन्होंने, पूज्यपाद गुरुदेव की छत्र-छाया में महानन्द कुटी का लाक्षागृह पर पुनः निर्माण कराया और अपने गृह पर वेद ब्रह्म परायण महायागों का आयोजन भी पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में कराने का सौभाग्य परिवार सहित प्राप्त किया।। उसी ज्योति को आगे बढ़ाते हुए श्री अतुल त्यागी जी ने लाक्षागृह बरनावा आश्रम में अपने स्व. पिता जी की स्मृति में एक भव्य कक्ष का निर्माण कराया है। सेवा निवृत्त होने के पश्चात शनैः-शनैः अपने जीवन को अध्यात्म की तरफ निरन्तर ले जाने में अपेन परिवार सहित प्रयत्नशील थे परन्तु अकस्मात् ही अमरावती को चले गये। इस सम्बन्ध विच्छेद से त्यागी जी का परिवार उनके दुर्लभ मधुर प्यार, व्यवहार व मार्गदर्शन से वंचित हो गया है जिसके लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि इस परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री गाँधी धाम समिति (पंजी.)
वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृंङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता

1. यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	50.00	32. याग और तपस्या	45.00
2. यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00	33. यागमयी-साधना	30.00
3. यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00	34. यागमयी-सृष्टि	25.00
4. यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00	35. याग-चयन	25.00
5. यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00	36. दिव्य-रामकथा	100.00
6. Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00	37. ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
7. वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00	38. दिव्य-ज्ञान	35.00
8. आत्म-लोक	25.00	39. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
9. धर्म का मर्म	30.00	40. महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
10. शंका-निवारण	25.00	41. आत्म-उत्थान	30.00
11. यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	40.00	42. तप का महत्व	30.00
12. आत्म व योग-साधना	25.00	43. अध्यात्मवाद	25.00
13. देवपूजा	20.00	44. ब्रह्मविज्ञान	35.00
14. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	100.00	45. वैदिक-पभा	30.00
15. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	100.00	46. प्रकाश की ओर	35.00
16. अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00	47. कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
17. रामायण का रहस्य	35.00	48. वैदिक-विज्ञान	35.00
18. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00	49. धर्म से जीवन	30.00
19. महाभारत के रहस्य	20.00	50. आत्मा का भोजन	35.00
20. अलङ्कार-व्याख्या	35.00	51. साधना	30.00
21. रावण-इतिहास	40.00	52. त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
22. महाराजा-रघु का याग	25.00	53. यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
23. वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00	54. यौगिक प्रवचन माला भाग-6	60.00
24. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00	55. स्वर्ग का मार्ग	40.00
25. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00	56. यौगिक प्रवचन माला भाग-7	60.00
26. आत्मा, प्राण और योग	20.00	57. माता मदालसा	40.00
27. पञ्च-महायज्ञ	30.00	58. यौगिक प्रवचन माला भाग-8	60.00
28. अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00	59. यौगिक प्रवचन माला भाग-9	65.00
29. याग-मन्जूषा	25.00	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00
30. आत्म-दर्शन	25.00		
31. पुत्रेष्ठि-याग और मातृ-दर्शन	25.00		

मासिक सहयोग

श्री हरिराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी, सुपुत्रश्री-जयप्रकाशजी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री पूनम त्यागी, नोएड़ा	500 रुपये
श्री वी. पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	500 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री नानकचन्द, देहरादून	200 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएड़ा,	125 रुपये
डॉ. ओ. पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्ण नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोएड़ा	100 रुपये

सूचना

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.) के सभी आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि समिति की आगामी साधारण सभा की बैठक दिनाँक 16 सितम्बर 2012 को दिन रविवार में दुपहर 3 बजे आर्य समाज मन्दिर, मालवीय नगर, नयी दिल्ली पर होगी। जिसमें सभी आजीवन सदस्यों को समय पर पहुँच कर भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित किया जाता है। बैठक में निम्न विषयों पर विचार-विमर्श होगा–

1. पिछली साधारण सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
2. साहित्य प्रकाशन सम्बन्धी सभी विषयों पर विचार-विमर्श।
3. समिति के पिछले वर्ष के आय व व्यय के ब्यौरे की पुष्टि और भविष्य के आय-व्यय पर विचार विमर्श।
4. अन्य प्रश्न प्रधान जी की अनुमति से।

मंत्री
वैदिक अनुसंधान समिति (पंजी.)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगानिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य संहिता, कैसेट्स, सी.डी. व डी.वी.डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरवाना, जि.–बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष : 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। दूरभाष : 0131-2603414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721394
4. डॉ. मधुसूदन, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली। दूरभाष : 011-26498737
5. श्री आशीष त्यागी, डी-293 रामप्रस्थ, गाजियाबाद, (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2642052
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) दूरभाष : 9412002233
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट-मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110,-मार्किट नोएड़ा, फेस-2, (उ.प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबार हरियाणा।
11. सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सेक्टर बीटा-2,–ग्रेटर नोएड़ा, (उ.प्र.) दूरभाष : 9313530505
12. श्री पूनम त्यागी, 96-A, सेक्टर-10 नोएड़ा, (उ. प्र.)।
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेड़ी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)।
15. मैं. गोविन्द राम, हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ. प्र.)।